शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०८-२०१८

वर्ष - २९ अंक - ८ अगस्त २०१८ विक्रम संवत् २०७५ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

विद्या भारती, सरस्वती शिशु मंदिर, हीरानार (जिला दन्तेवाड़ा) में पहुँचे देश के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी

छत्तीसगढ़ में हो रहे अवैधानिक धर्मांतरण के विरुद्ध विश्व हिन्दू परिषद ने रायपुर कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

राष्ट्र सेविका समिति, छत्तीसगढ़ प्रान्त का घोष शिविर, भिलाई (छ.ग.)

नागपुर महानगर में चल रहे सेवा कार्यों का प्रस्तुतिकरण 'सेवा दर्शन' कार्यक्रम में रा.स्व. संघ के सरकार्यवाह मा. भैयाजी जोशी

सुभाषित

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणं चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणं।
मित्रं विना नास्ति शरीर तोषणं विद्यां विना नास्ति शरीरभूषणं॥

अर्थात्– संतुलित जीवन के समान शरीर का पोषण करने वाला दूसरा नहीं है, चिंता के समान शरीर को सुखाने वाला दूसरा नहीं है, मित्र के समान शरीर को आनंद देने वाला दूसरा नहीं है और विद्या के समान शरीर का दूसरा कोई आभूषण नहीं है।

संपादकीय

भारत में विभिन्न तीज त्यौहारों, व्रत अनुष्ठानों तथा चातुर्मास की परम्परा अनादिकाल से हमारी विशिष्ट जीवनचर्या का द्योतक रही है। देश, काल और परिस्थितियों का समुचित सम्मान करते हुए हमारे पूर्वजों ने जिस राह पर चलकर अपने उन्नत लक्ष्य को प्राप्त किया वही हमारे लिए भी वरेण्य है।

अभी हाल ही में चर्च व उसके द्वारा संचालित सेवा कार्यों का भंडाफोड़ हुआ है। इनके केन्द्र कई प्रकार के अवैधानिक व अनैतिक कृत्यों के केन्द्र बन चुके हैं। मदर टेरेसा द्वारा स्थापित रांची के ''निर्मल हृदय'' आश्रम की घटना ने उनके कुकृत्यों को उजागर किया है। गत कुछ वर्षों से भारत में अलग-अलग स्थानों पर पादरियों के इन दुष्कृत्यों की संख्या में आश्चर्यजनक रुप से वृद्धि हुई है। इसलिए स्वाभाविक दृष्टि से विश्व हिन्दू परिषद ने संपूर्ण देशवासियों का इस ओर से ध्यान आकृष्ट कराकर भारत सरकार से इनकी जाँच कराने हेतु एक आयोग के गठन करने की माँग की है।

इस समय संसद की गलियारों में भी कई वर्षों बाद स्पष्ट बहुमत वाली बनी सरकार के विरुद्ध विपक्ष ने 'अविश्वास प्रस्ताव' लाकर संसद के बहुमूल्य समय की की बर्बादी को भी देश ने देखा है। ऐसे समय में प्रत्येक भारतवासी को अपने निर्णय गंभीरतापूर्वक सोच समझकर करते हुए अपने जागरुक नागरिकता का परिचय देना होगा।

ए महिना के तिहार

ए महीना के पहिली तिहार ग्यारा तारीक के हरेली (हरियाली अमावस्या) परिही तेकर ले तेरा तारीक के हरियाली तीज, पंद्रह तारीक के नागपंचमी अऊ भाई-बहिनी मन के राखी तिहार सावन पुन्नी के मनाथे जेन ह छब्बीस तारीक के हवय। महिना के पहिली एकादसी (कामदा) सात तारीक अऊ दूसर एकादसी (पुत्रदा) बाइस तारीक के परिही।

कामदा एकादशी	**- श्रावण कृ. 11**	**- 07 अगस्त**
हरियाली अमावस्या	**- श्रावण कृ. 15**	**- 11 अगस्त**
हरियाली तीज	**- श्रावण शु. 03**	**- 13 अगस्त**
नागपंचमी	**- श्रावण शु. 05**	**- 15 अगस्त**
पुत्रदा एकादशी	**- श्रावण शु. 11**	**- 22 अगस्त**
रक्षाबंधन	**- श्रावण शु. 15**	**- 26 अगस्त**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग पहिली तारीक के बाल गंगाधर तिलक, सात तारीक के गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर अऊ तेरा तारीक के अहिल्याबाई होलकर के पुण्यतिथि घलौ हवय।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म नौ तारीक के **भारत छोड़ो आंदोलन दिवस**, छब्बीस तारीक सावन पुन्नी के **संस्कृत दिवस** अऊ उनतीस तारीक के **राष्ट्रीय खेल दिवस** घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार - जय माँ भारती।

सुविचार

शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते हैं। वे स्वयं जहाँ हैं वहीं पर रहते हैं, किन्तु दूसरों को उनके लक्ष्य तक पहुँचा ही देते हैं।

लक्ष्य प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम और बुलंद हौसलों से सफलता निश्चित है।

श्वेता अग्रवाल जिन्होंने 2015 में हुई यूपीएससी की परीक्षा में 19वीं रैंक प्राप्त कर अपने आईएएस बनने के सपने को साकार किया। इनका संघर्ष कई बाधाओं को पार करने की कहानियों से भरा है। इसमें मूलभूत शिक्षा सुविधाओं से लेकर यूपीएससी परीक्षा 2015 की अव्वल 3 महिला उम्मीद्वारों में आना तक शामिल हैं। वे बताती हैं कि, आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवार में कैसे गरीबी से लड़ते हुए उनके माता-पिता ने उन्हें अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित किया। इसलिए श्वेता को अपने माता-पिता पर बेहद गर्व है।

अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद श्वेता ने सेंट जेवियर्स कॉलेज कोलकाता से अर्थशास्त्र में स्नातक किया।

श्वेता ने इससे पहले यूपीएससी परीक्षा दो बार पास की लेकिन ये आईएएस अधिकारी ही बनना चाहती थी। बंगाल कैडर में शामिल होने पर श्वेता को गर्व है और यह भी सोचती हैं कि ज्यादातर युवा सिविल सेवा से इसलिए दूर रहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्हें जनता की बजाय राजनीतिक आकाओं के दबाव

में काम करना पड़ेगा। यह हमेशा कहा जाता है कि मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की के माता-पिता द्वारा उनके महत्वाकांक्षी सपनों को समर्थन देना बहुत मुश्किल होता है लेकिन महिला पुरुष भेद समेत सभी प्रकार की बाधाओं को पीछे छोड़ते हुए श्वेता ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से एक उदाहरण प्रस्तुत किया है और आज कई महिलाओं एवं युवाओं की प्रेरणा बन गई हैं।

प्रेरक प्रसंग

राष्ट्रभाषा का प्रेम

फ्रांस पर जर्मनी की विजय के बाद फ्रांस की सभी शालाओं में फ्रेंच के स्थान पर जर्मन भाषा पढ़ाई जाने लगी। पराधीन फ्रांस के देशभक्तों के पास इसका कोई उपाय नहीं था।

इसी बीच जर्मनी की रानी फ्रांस की यात्रा के बीच वहाँ की एक शाला का निरीक्षण करने के लिये गई। वहाँ फ्रेंच बालिका की असामान्य बुद्धि से वे बहुत प्रभावित हो गई। उन्होंने कहा, 'तुम्हें क्या पुरस्कार दूँ ?'

बालिका बोली, 'सच! मैं जो माँगूँगी, आप देंगी ?'

रानी के साथ आए एक जर्मन अधिकारी ने कहा, 'रानी सर्वशक्तिमान हैं। तुझे जो चाहिए, सो माँग ले।'

रानी ने भी कहा, 'तू जो माँगेगी, वह मैं तुझे दूँगी।'

इस पर बालिका बोली, 'तो फिर रानी साहिबा ! इतना ही कीजिये कि हमारी शाला में जर्मन भाषा की बजाय फ्रेन्च भाषा पढ़ाई जाए।'

रानी बोली, 'इससे तुझे क्या लाभ होगा ?, तू फीस माफी माँग ले। अच्छे कपड़े माँग ले। मिठाई माँग ले। पर यह न माँग।'

बालिका बोली, 'यह सब कुछ मुझे नहीं चाहिये। देना ही है तो केवल फ्रेन्च भाषा पढ़ाने की व्यवस्था करा दें।'

तब रानी बालिका के राष्ट्रभाषा प्रेम से भावविभोर हो गयी। उन्होंने उसकी माँग स्वीकार कर ली।

रक्षाबंधन उत्सव का महत्व

परस्पर संबंधों पर आधारित है जिन्दगी, संबंध की पवित्रता को ठीक समझकर परस्पर पूरक जीवन जीने से ही ऐश्वर्य की प्राप्ति कर सकते हैं, इस तत्व को श्रीकृष्ण जी ने बहुत ही रोचक ढंग से भगवद्गीता में कहा है—

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये भगवान जिस श्रेयमार्ग को दिखाता है उस अंतर संबद्धता का महोत्सव है श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला रक्षाबंधन उत्सव।

सबसे श्रेष्ठ संबंध भातृत्व भाव है। हम सब एक ही माता के पुत्र हैं, इस भाव से ही एकात्म भाव प्रकट हो जाता है। वहीं से परस्पर ऐक्य भाव से अनन्य भाव के साथ आपस में सेवा करने का भाव अंकुरित हो जाता है। आत्मैक्य बोध का अभाव समाज को बिखराव, पराभव और सर्वनाश की ओर खींचकर ले जायेगा।

रक्षाबंधन से संबंधित उदाहरण इस वैचारिक पक्ष को उजागर करते है। भयानक पराजय व पलायन के बावजूद देवेन्द्र के नेतृत्व में देवगण अमरावती के ऊपर अपना वर्चस्व पुनर्स्थापित करने के लिये एक अनुष्ठान के रूप में रक्षाबंधन को अपनाते हैं, ऐसा इतिहास में वर्णन आता है। आपस में जोड़ने वाला आंतरिक पवित्र सुवर्ण सूत्र तोड़ने से देवों की पराजय प्रारंभ हो गई, एकता और अपनेपन का भाव नष्ट होने के कारण देवत्व लुप्त हो कर वे सामान्य बन गये। गुरु के आदेशानुसार हुये रक्षाबंधन से उनको सम्पतियाँ वापस मिलती है। दैवी संपत्ति वापस आने पर वे शक्तिशाली होकर संपूर्ण विश्व को बचाते हैं। अपनेपन के भाव से एकात्म बनकर, परस्पर भावयन्तः के आधार पर वे एक श्रेष्ठ लक्ष्य को पाने के लिये अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये आगे आते हैं। आसूरी शक्तियों के ऊपर विजय प्राप्त करते हैं।

इस कहानी से प्रेरणा पाकर हर श्रावण माह की पूर्णिमा को राखी बांधकर रक्षाबंधन मनाने का क्रम हिन्दुओं ने प्रारंभ किया। भारतीय इतिहास पर नजर डालें तो प्रत्येक महत्वपूर्ण क्षणों में रक्षाबंधन से उसके गौरवमय दायित्व को निभाने की झलक मिल जायेगी। विदेशी आक्रमण का मुकाबला करने के लिये रण बांकुरों को सजाने में, मुगल अत्याचारों के विरुद्ध राजपुत्रों ने जो मोर्चा खड़ा किया। उसके पीछे तथा बांटकर राज करने के ब्रिटिश षड्यंत्रों को पराभूत करने में रक्षाबंधन से मिला हुआ जोश एवं स्फूर्ति कारक थी। जाति, वर्ण के ऊपर उठकर राष्ट्र के लिये प्राण देने की प्रेरणा रक्षाबंधन ने दी है। राष्ट्र को परमवैभव के शिखर तक ले जाने के लिये स्थापित हुये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मूलभूत कार्यों जैसे व्यक्ति निर्माण, स्वत्व जागरण, समरस समाज निर्माण, समाज संगठन आदि रक्षाबंधन के आधारभूत मूल्यों के साथ मेल खाते हैं। इसलिये संघ की शाखाओं में मनाये जाने वाले राष्ट्रीय उत्सवों में **रक्षाबंधन** भी शामिल हो गया।

रक्षाबंधन के उत्सव के पीछे का भाव व तत्व कितना महत्वपूर्ण था इसके बारे में बहुत कुछ कहा गया। स्वत्व जागरण एवं स्वातंत्र्य हासिल करने के लिये हुये संघर्ष के कालखंड में रक्षाबंधन ने धार्मिक और राष्ट्रीय भूमिका को कैसे निभाया यह भी प्रारंभ में वर्णन किया है। लेकिन बाद में इतिहास की तेज गति के साथ रक्षाबंधन एक उत्सव मात्र बन गया, इस अवस्था में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं के द्वारा रक्षाबंधन एक सामाजिक आयाम बन गया है। इसके साथ-साथ संपूर्ण समाज को संगठित, सशक्त बनाने के संघ के लक्ष्य को सार्वजनिक रक्षाबंधन उत्सवों के द्वारा बहुत ज्यादा प्रेरणा

मिलती है।

सही अर्थ में समाज को संगठित व सशक्त बनाना है तो उसकी पूर्व शर्तों में सर्वप्रथम समरसता का अनुभव सर्वत्र पहुँचाने का कार्य है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर, मैं समाज का एक अभिन्न अंग हूँ ऐसा भाव जगना चाहिये। इस प्रेरणा के बिना समाज हित के लिये कार्य करने की अनुभूति जगाना कठिन होता है। सबल, सम्पन्न समाज खड़ा करने में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वूपर्ण है। समाज का पिछड़ापन मेरी कमजोरी है, उस कमजोरी को दूर करने के लिये समाज में रचनात्मक कार्य प्रारंभ करने होंगे।

समाज का एक वर्ग या व्यक्ति अगर दुर्बल है तो, समाज उस हिसाब से दुर्बल है। समाज की दुर्बलता को ठीक किये बिना समाज आगे नहीं बढ़ेगा। समाज के सभी सदस्यों ने अपने आप आगे आकर, पिछड़े हुये बंधुओं को आगे करने के लिये प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा होता है तो पूरे समाज में विशेषत: दुर्बल वर्ग में और मेरे अंदर एक ही चेतना विद्यमान है अथवा हम संघ एक ही हैं का बोध निर्माण होगा। समरसता की अनुभूति जगाना है तो, हम सब कौन है यह समझना चाहिए।

अपने समाज के संदर्भ में विचार किया तो यह मालूम हो जायेगा कि हम सब **हिन्दू** है। अपना स्वत्व हिन्दुत्व ही है। समाज को जोड़ने वाली शक्ति अर्थात् हिन्दुत्व को ठीक से समझकर उस आधार पर आगे बढ़ना। स्वामी विवेकानंद जी ने इसीलिए बिना संदेह के यह सत्य बताया ''then and then alone you are a hindu when the very name sends through a galvanic stroke of strength'' तब ही आप हिन्दू नाम सुनकर ही आपके शरीर में शक्ति का एक विद्युत प्रवाहित हो जायेगा। आगे चलकर उन्होंने यह भी कहा है कि एक हिन्दू का दु:ख एवं कष्ट आपके हृदय को अनुभव करना चाहिये। वह दीन-दु:खी व्यक्ति आपका ही पुत्र है, ऐसा जब आपको लगेगा उसी वक्त आप हिन्दू हो जायेंगे।

इसमें दो पहलू है। पहली बात हिन्दुत्व बोध और दूसरी बात, हम सब एक है ऐसी भावना हैं। मतलब स्वत्व बोध से समरसता की अनुभूति जगेगी।

आर्थिक या सामाजिक या सांस्कृतिक, किसी भी प्रकार का पिछड़ापन अगर समाज में रहता है तो, उसको दूर करते हुये, उन बंधुओं को आगे ले जाने की जरुरत है। उसके बिना देश का विकास संभव नहीं है। यह सत्य समझकर प्रत्येक व्यक्ति ने स्वार्थ छोड़कर अपनेपन के भाव से समाज के लिए कार्य करना चाहिए। यह प्रेरणा रक्षाबंधन देता है। उन लोगों की उन्नति का संपूर्ण दायित्व अपने मन में लेने का संकल्प इस रक्षाबंधन की पवित्र बेला में हमें लेना चाहिए।

(जे. नन्दकुमार, संयोजक, प्रज्ञा प्रवाह)

हमर सियान मन तीज तिहार के पता लगाय बर अइसे कहँय

रथदूतिया के 15 दिन हरेली
हरेली के 15 दिन राखी
राखी के 8 दिन आठे
आठे के 8 दिन पोरा
पोरा के 3 दिन तीजा
तीजा के बिहान दिन गनेसचौथ
गनेस ठंडा करेके बिहान दिन पितरपाख

पितरपाख के बिहान दिन नवरात
नवरात के 10 दिन दसेरा
दसेरा के 20 दिन देवारी
देवारी के 10 दिन जेठोनी

अइसे हमर सियान मन बिना कलेंडर अऊ पंचांग के तीज तिहार ल जान डारँय अऊ हँसी खुशी के साथ तिहार मन ल मना डारे।

भारत की पहचान हिंदुत्व से है, इसलिए इतिहास में हो संशोधन

पिछले दिनों लखनऊ में महामना मालवीय मिशन के तत्वावधान में 'महामना एवं हिन्दुत्व' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी उपस्थित थे। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महामना तत्कालीन **स्वदेशी कांग्रेस** के चार बार अध्यक्ष रहे थे, किन्तु जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'भारत रत्न' पुरस्कार नहीं दिया। **विदेशी कांग्रेस** के पुरोधा नेहरू ने स्वयं को तो भारत रत्न से विभूषित किया, किन्तु स्वदेशी कांग्रेस के नेता सरदार पटेल एवं डॉ. आम्बेडकर की अवहेलना की।

उन्होंने कहा कि देश की एकता और अखंडता के लिए संस्कृत भाषा अत्यंत उपयोगी है। हिंदी को राज भाषा का दर्जा देते हुए देश की सभी मातृभाषाओं को संस्कृत से जोड़ना चाहिए। महामना के सपनों का भारत बनाने के लिए संस्कृत के पठन-पाठन पर जोर देना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जिस प्रकार इंग्लैण्ड की अस्मिता ईसाइयत से है उसी प्रकार भारत की अस्मिता हिंदुत्व से होनी चाहिए।

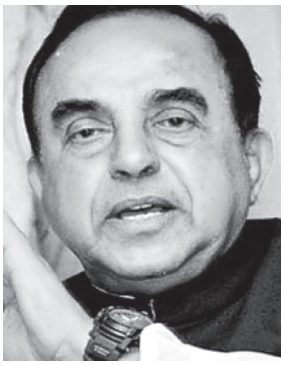

देश का मूलभूत चरित्र हिंदुत्व होने के कारण सभी की अस्मिता की पहचान हिंदुत्व से होनी चाहिए। इस दृष्टि से अपने इतिहास में संशोधन होना चाहिए। विषय प्रस्तुत करते हुए महामना मालवीय मिशन के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अवध प्रांत के संघचालक श्री प्रभुनारायण श्रीवास्तव जी ने कहा कि आज मानव सभ्यता संक्रमण काल से गुजर रही है, इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम गिलहरी से लेकर हनुमान तक, कोई भी भूमिका निभाने के लिए और दो-दो हाथ करने के लिए तैयार रहें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्वदेशी चिंतक श्री के.एन. गोविन्दाचार्य ने कहा कि महामना मालवीय ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया था कि सफलता साधनों से नहीं, साधना से मिलती है। विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी उन्होंने अपने विचारों को जी कर दिखाया था।

(साभार-पाञ्चजन्य)

आमने-सामने

बेशर्म कांग्रेस

जैसे ही भाजपा लोकसभा व राज्यसभा में दो तिहाई बहुमत और आधे राज्यों में बहुमत हासिल कर लेगी, वह मौजूदा संविधान बदल कर नया संविधान लिखेगी। फिर अल्पसंख्यकों के लिए समानता वाले अधिकार हटाकर भारत को 'हिन्दू पाकिस्तान' में बदल देगी।

— शशि थरूर, कांग्रेस

थरूर कहते हैं कि 2019 में भाजपा सत्ता में आई तो भारत 'हिन्दू पाकिस्तान' बन जाएगा। बेशर्म कांग्रेस भारत को बदनाम करने व हिन्दुओं का अपमान करने का कोई मौका नहीं छोड़ती। 'हिन्दू आतंकियों' से लेकर 'हिन्दू पाकिस्तान' तक कांग्रेस के बयान अतुलनीय हैं।

— संबित पात्रा, भाजपा

वन्दनीया लक्ष्मीबाई केलकर

(संकल्प दिवस आषाढ़ शुक्ल दशमी)

राष्ट्र सेविका समिति की निर्मात्री तथा आद्य प्रमुख संचालिका वन्दनीया श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य **मौसीजी** एक अलौकिक संगठन कुशल व्यक्तित्व है।

व्यक्तिगत जीवन—वन्दनीया मौसीजी का जन्म आषाढ शुक्ल दशमी के अवसर पर 5 जुलाई 1905 को नागपुर के दाते परिवार में हुआ। तरोताजा प्रफुल्लित कुसुम जैसी बालिका को देखते ही डॉक्टर ने उनका नामकरण '**कमल**' रख दिया।

दाते परिवार आर्थिक रुप से विशेष संपन्न नही था परंतु वैचारिक रुप से पूर्णत: संपन्न था। उन्होंने अपनी ताईजी से सुश्रुषा का गुण, पिताजी से सामाजिक गुण तथा माताजी से निर्भयता तथा राष्ट्र प्रेम के गुण विरासत में आत्मसात किये थे। लोकमान्य तिलक जी की प्रतिमा घर में रखकर, पड़ोस की महिलाओं को एकत्रित करके उनको माताजी **केसरी** समाचार पत्र का वाचन कराती थी। जिन दिनों सरकारी नौकरों को केसरी घर में रखने की अनुमति नहीं थी, उन दिनों में कमल की माताजी अपने नाम पर केसरी खरीदती थी। अपनी चाची ताईजी के साथ वह गोरक्षा हेतु भिक्षा के लिये तथा कीर्तनों में जाती थी तथा जाने अनजाने संस्कार ग्रहण कर रही थी। उन दिनों में स्वतंत्र बालिका विद्यालय न होने के कारण उन्हें मिशनरी स्कूल में प्रवेश लेना पड़ा। वहाँ की शिक्षा तथा घर में मिलने वाली शिक्षा में बहुत अंतर प्रतीत होने से उनके मन में निरंतर संघर्ष चल रहा था और यही संघर्ष एक दिन वास्तव रुप में उभर कर आया। विद्यालय में प्रार्थना के समय आंखे बंद रखने का नियम था। एक दिन कमल ने बीच में ही आँखे खोली तो उसे डांट पड़ी। निर्भय कमल ने तुरंत उस अध्यापिका से प्रश्न किया ''अगर आपकी आँखे बंद थी तो आपको कैसे पता चला कि मैंने आँखे खोली थी ?'' जिसका उत्तर अध्यापिका के पास नही था। कमल ने उस विद्यालय में जाना छोड़ दिया। उनकी आगे की पढ़ाई '**हिन्दू मुलींची शाळा**' इस विद्यालय में हुई। कमल चौथी कक्षा तक पहुँचते ही उसके विवाह के प्रयास शुरु हो गये। अन्याय कारक घटनाओं से उसे बचपन से चिढ़ थी। उन्होंने सभी को दहेज दिये और लिये बिना विवाह के लिये प्रेरित किया और स्वयं ने भी इसी विचारधारा का अनुकरण किया। विवाह के पश्चात् 14 वर्ष की आयु में ही वह दो बच्चों की माँ बन गयी। उनके पति पुरुषोत्तमराव केलकर वर्धा के प्रख्यात वकील थे। कमल को वैवाहिक जीवन का सुख 10-12 वर्ष ही मिला। राजयक्ष्मा के कारण अल्पायु में ही पुरुषोत्तमराव का निधन हो गया। 2 बेटियाँ और 6 बेटों की जिम्मेदारी कमल पर थी। पति निधन के कारण गृहस्थी पर आए वज्राघात का पहाड़ लक्ष्मीबाई पर टूट पड़ा।

विवाहोत्तर जीवन—पति निधन के पश्चात भी उनके कार्यक्रम कांग्रेस की प्रभात फेरी, पिकेटिंग आदि कार्यक्रम चलते ही रहे। उस समय विधवा महिला को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी, ऐसे समय में लक्ष्मीबाई का यह व्यवहार प्रवाह को विरुद्ध दिशा में मोड़ने वाला था। वर्धा में गांधीजी के आश्रम में प्रार्थना के लिये उपस्थित रहती थी। प्रश्नोत्तर के समय एक महिला ने गांधीजी से प्रश्न किया कि आप महिलाओं को सदैव सीताजी का आदर्श सामने रखने कहते हैं तो क्या पुरुषों को श्रीराम का आदर्श रखने कहेगें ? गांधी जी ने कहा कि सीता के जीवन से ही राम की निर्मिति होती है। उन्हें अंतर्मुख बना दिया। उन्होंने रामायण का अध्ययन प्रारंभ किया। महिलाओं की स्थिति, अपहरण अत्याचार तो वह स्वयं देखती थी, समाचार भी पढ़ती थी। धीरे-धीरे जीवन पद्धति में परिवर्तन हो रहा था। स्त्री की ओर देखने का दृष्टिकोण बदलने लगा था। स्त्री को निर्भयता के साथ

खड़ा होना आवश्यक है, इसकी आवश्यकता वह स्वयं ही अनुभव कर रही थी। महिलाओं को स्वसंरक्षणक्षम कैसे बनाये ? कौन सा मार्ग ढूंढे? इस विषय पर चिंतन चल रहा था। इसी समय उनके पुत्रों के माध्यम से उनका परिचय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ और इसी प्रकार का संगठन महिलाओं के लिये भी बनाने की आवश्यकता की बात उन्होंने ठान ली। उसी समय डॉ. हेडगेवार जी का आगमन वर्धा में हुआ। उन्होंने डॉक्टर हेडगेवारजी से अपने बेटों की अभिभावक के नाते मिलने की इच्छा प्रदर्शित की। बेटों ने अधिकारियों से पूछकर अनुमति ली और अनुमति मिलने पर कार्यक्रम के समय वे उपस्थित रही। उस समय वंदनीया मौसीजी ने महिलाओं के लिये भी राष्ट्रीय दृष्टि से संगठित होने की बात बतायी। महिलाओं को स्वसंरक्षणक्षम बनना आवश्यक है। वंदनीया मौसीजी का दृढ़निश्चय देखकर डॉ. हेडगेवार जी ने उन्हें इस कार्य के लिये पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना—वंदनीया मौसीजी के विचारों को वास्तविक रुप प्राप्त हुआ और वर्धा में सन् 1936 को विजयादशमी के दिन राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हुई। महिलाएँ प्रतिदिन निश्चित समय पर एकत्रित होने लगी। प्रार्थना तैयार हुई। स्त्री सुशीला, सुधीरा तथा समर्थ बने। इस तरह महिलाओं का प्रतिदिन एकत्रित होना, दण्ड चलाना, खेल खेलना यह देखकर उस समय के समाज के द्वारा विरोध हुआ परंतु मौसीजी अपने दृढ़ संकल्प पर डटी रही।

स्वयं सिद्धता—स्वयं को निरंतर संगठन के ढांचे में ढालने का उनका प्रयास जारी था। प्रारंभ में उन्हें भाषण देना नहीं आता था परंतु समाज जागरण तथा मार्गदर्शन करने की आंतरिक इच्छा से उन्होंने संबंधित विषय का अध्ययन करना, उसमें से बिंदु निकालना और उन्हें प्रभावी भाषा में लोगों के सामने रखने का अभ्यास किया और धीरे-धीरे वह उत्कृष्ठ वक्ता बन गई। उन्हें समिति की शाखाओं में जाना पड़ता था इसलिये उन्होनें साइकल चलाना सीखा, तैरना भी उन्हें आता था।

गहन चिंतन—वंदनीया मौसीजी ने संगठन की नींव स्वयं तैयार की थी। समिति में दी जाने वाली शारीरिक शिक्षा उसकी शारीरिक रचना या स्वास्थ्य में कोई चीज बाधक तो नहीं है इस बात का विचार किया। 1953 में उन्होंने स्त्री जीवन विकास परिषद का आयोजन कर डॉक्टरों को एकत्रित किया और महिलाओं के संपूर्ण स्वास्थ्य के बारे में परिचर्चा आयोजित की। योगासन का महत्व जानकर उन्होंने स्वयं योगासन का प्रशिक्षण लिया। समिति के शिक्षा वर्गों में भी योगासन का समावेश किया।

रामभक्ति—वंदनीया मौसीजी श्रीराम की असीम भक्त थी। श्रीराम उनके आदर्श थे। उन्होंने रामायण व उससे संबंधित अनेक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा रामायण के प्रवचन कर रामायण का राष्ट्रीय दृष्टिकोण जनता के सामने रखा। उन्होंने 108 प्रवचन किये। उनका कहना था कि राम को केवल भगवान समझकर उसकी पूजा मत करो, राम एक राष्ट्रपुरुष है, उसका अनुकरण करो।

वंदनीया मौसीजी की स्मरण शक्ति अत्यंत विलक्षण थी। एक बार परिचय होने पर वह उस व्यक्ति को नाम सहित हमेशा याद रखती थी।

व्यवस्थित सरल जीवन, कलात्मक सांस्कृतिक दृष्टि

वंदनीया मौसी जी का रहन सहन अत्यंत सादा सरल था। वह हमेशा स्वच्छ और सफेद सूती साड़ी पहनती थी। उनका हर काम कलात्मक रहता था। समय मिलते ही सिलाई कढाई चालू रहती थी। हर उत्सव में, सांस्कृतिक प्रतीकों के प्रदर्शन का आग्रह रहता था। हर परिवार में एक स्थान ऐसा हो जहाँ परिवार के सभी सदस्य मिलकर राष्ट्र के बारे में दिन में एक बार सोचे। **वंदे मातरम्** माँ की प्रार्थना है इसलिये उसे गाते समय दोनों हाथ जोड़ने की पद्धति उन्होंने ही प्रारंभ की।

कुशल संगठक—दो महिलाएँ कभी एकत्र आकर कार्य करना संभव नहीं है परंतु समिति में लक्ष्मी और सरस्वती ने मिलकर राष्ट्र सेविका समिति का मार्ग प्रशस्त किया। प्रातः स्मरण, देवी अष्टभुजा स्तोत्र, पूजा, नमस्कार इत्यादि रचनाएँ उन्होंने ही तैयार की।

साहसी वृति—अगस्त 1947 का समय था। देश के विभाजन के समय सिंध प्रांत की सेविका जेठी देवानी का पत्र आया कि सेविकाएँ सिंध प्रांत छोड़ने से पहले मौसीजी का दर्शन कर मार्गदर्शन चाहती है। देश में भयावह वातावरण होते हुए भी मौसीजी ने सिंध जाने का साहसी निर्णय लिया और 13 अगस्त 1947 को साथी कार्यकर्ता वेणुताई को साथ लेकर हवाई जहाज में मुंबई से करांची गई। हवाई जहाज में दूसरी कोई महिला नहीं थी। श्री जयप्रकाश नारायण और पूना के श्री देव थे वे भी अमदाबाद उतर गये। अब हवाई जहाज में ये दो महिलाएँ थी तथा बाकी सारे मुस्लिम। वे मुस्लिम लड़के नारे लगा रहे थे– हँसकर लिया पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान। करांची में दामाद श्री चोळकर ने आकर उन्हें गंतव्य तक पहुँचाया। दुसरे दिन 14 अगस्त करांची में एक घर की छत पर 1200 सेविकाएँ एकत्रित हुई। कठिन परिस्थितियों में सबके बीच वंदनीया मौसीजी ने प्रतिज्ञा का उच्चारण किया, सेविकाओं ने दृढ़तापूर्वक उसका अनुसरण किया। अंत में वंदनीया मौसीजी ने कहा – धैर्यशाली बनों, अपने शील का रक्षण करों, संगठन पर विश्वास रखों, यह परीक्षा की घड़ी है। वंदनीया मौसीजी से पूछा गया – हमारी इज्जत खतरे में है, हम क्या करें ? कहाँ जाएँ ? वंदनीया मौसीजी ने आश्वासन दिया कि, आपके भारत आने पर आपकी सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इस तरह असंख्य युवतियों और महिलाओं को आश्रय और सुरक्षा प्रदान कर वंदनीया मौसीजी ने अपनी साहसी वृत्ति का परिचय दिया।

ऐसे व्यक्तित्व को ही वन्दनीय कहा जाता है। वन्दनीय इसलिये नहीं कि उनके पास लंबी उपाधियाँ थी या वे धनवान थी। न तो उनके पास कोई सिद्धी थी ना वह कोई तंत्र मंत्र जानती न मानती थी। वे तो एक आम महिलाओं जैसी एक सीधा सादा सरल गृहस्थी जीवन व्यतीत करने वाली स्त्री थी। बाल्यकाल से ही प्राप्त राष्ट्रीय संस्कार और बुद्धिमता, तेजस्विता के साथ–साथ राष्ट्र कार्य के प्रति अत्यधिक आस्था के कारण ही उन्होंने यह अद्वितीय कार्य कर दिखाया। वंदनीया मौसीजी का शांत, पवित्र तेजस्वी जीवन 27 नवंबर 1978 कार्तिक कृष्ण द्वादशी को पंचतत्व में विलीन हो गया। देह नष्ट हुआ, कीर्ति, प्रेरणा अमर है, निरंतर चलती रही है और आगे भी चलती रहेगी। उनके पुण्यस्मरण पर विनम्र आदरांजली।

(लेखिका–सौ. प्राजक्ता देशमुख, राष्ट्र सेविका समिति छत्तीसगढ़ की प्रान्त कार्यवाहिका है)

मा. सरकार्यवाह भैयाजी जोशी द्वारा जारी वक्तव्य

अफगानिस्तान के जलालाबाद प्रांत में इस्लामिक कट्टरपंथी आतंकवादी शक्तियों द्वारा हिन्दू–सिखों की अमानवीय हत्या पर हम गहरा शोक व्यक्त करते हुए इस दुष्कृत्य की कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति व शोक–संतप्त परिवारों को इस अकल्पनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आशा है कि अफगानिस्तान सरकार दोषियों को चिन्हित कर कठोर दंड सुनिश्चित करेगी व भारत सरकार से आग्रह है कि इस घटना की गंभीरता को समझते हुए उचित कदम उठाये।

विश्व की सभी लोकतांत्रिक शक्तियों से आव्हान है कि वे एकजुट होकर इस कट्टरपंथी आतंक को समूल नष्ट करने के लिए कठोर निश्चयात्मक कार्रवाई करे।

दिल्ली, 3 जुलाई, 2018

(अरुण कुमार)
अ.भा. प्रचार प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कबीर ने कहा था, कल करे सो आज कर ... हम इसी में यकीन करते हैं।

— प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

मगहर, संत कबीर नगर। गत दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उत्तर प्रदेश स्थित संत कबीरदास की 500 वीं पुण्यतिथि पर उनकी निर्वाण स्थली मगहर पहुँचे। वह मगहर पहुँचने वाले देश के पहले प्रधानमंत्री है। वे 28 जून को संत कबीरदास के 620 वें प्राकट्य उत्सव समारोह के अवसर पर पहुँचे। यहाँ एक जनसभा में कबीर के दोहें सुनाकर नरेन्द्र मोदी ने कहा कि, दुर्भाग्य से महापुरुषों के नाम पर ऐसी राजनीति की धारा तैयार की जा रही है, जो समाज को तबाह कर रही है। कुछ लोग चाहते है कि, देश में कलह निर्माण हो, जिसका वे राजनीतिक फायदा उठा सके। ऐसे लोगों ने कबीर को कभी जाना ही नहीं। हम लोग कबीर की रीति-नीति के हिसाब से ही काम कर रहे है। उन्होंने कहा कि, हम मगहर में 24 करोड़ रुपए खर्च कर महात्मा कबीर की स्मृतियों को संजोने वाली संस्थाओं का निर्माण करेंगे। ये संस्थाएँ यहाँ की आँचलिक भाषाओं के विकास का भी काम करेंगी। कबीर अपने कर्म से वंदनीय हो गए। धूल से उठे थे लेकिन वे माथे का चंदन बन गए। कबीरदास व्यक्ति से अभिव्यक्ति हो गए और इससे भी आगे वह शब्द से शब्द ब्रह्म बन गए। विचार बनकर आए और व्यवहार बनकर अमर हो गए।

आगे नरेन्द्र मोदी बोले, कबीर ने कहा था कि, मांगन मरण समान है, मत कोई मांग्यों भीख, मांगन से मरना भला, पर आजादी के इतने सालों बाद भी हमारे नीति निर्माताओं ने कबीर की नीति को नहीं समझा। हमने चार साल में उस रीति-नीति को बदलने का प्रयास किया है। कबीर ने कहा था कि—

कल करे सो आज कर .....

हम भी इसी में यकीन करते है। कबीर कर्मयोगी है, आज देश में हो रहा विकास कबीर के कर्मयोग का ही रास्ता है।

निर्भया के दोषियों को फांसी की सजा बरकरार

सर्वोच्च न्यायालय ने निर्भया सामूहिक बलात्कार और हत्या के मामले में फांसी से बचने का प्रयास कर रहे तीन दोषियों की पुनर्विचार याचिकाएं खारिज कर दी। निर्भया मामले में मृत्युदंड की सजा पा चुके चार में से तीन दोषियों की याचिका

पर सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि 5 मई, 2017 के फैसले पर पुनर्विचार करने के लिए कोई आधार नहीं बचा है। जिन दोषियों को मौत की सजा सुनाई गई है, वे उसके फैसले में साफ तौर पर कोई भी त्रुटि सामने रखने में विफल रहे हैं।

घोष शिविर में वाद्य यंत्रों के साथ सीखा अनुशासन

भिलाई। कदम से कदम मिलाती बालिकाएं। मिलिट्री बैंड की तरह कतारबद्ध होकर बैंड बजाती हुई भारत माता का जयघोष करते हुई आगे बढ़ रहीं थीं। यह दृष्य था, गत दिनों सम्पन्न हुए राष्ट्र सेविका समिति के तीन दिवसीय घोष (वाद्य यंत्र) के प्रशिक्षण शिविर का। जिसमें प्रदेश के कोने से कोने से आयी बालिकाएं, महिलाएं अनुशासन और देशभक्ति का पाठ पढ़ने के लिए सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर 4 भिलाई में एकत्रित हुई थीं। शिविर के अंतिम दिन लगभग 50 बालिकाओं ने घोष का उत्तम प्रदर्शन किया।

इस दौरान बालिकाएं राष्ट्र सेविका समिति की पूर्ण गणवेश में थी। कार्यक्रम समापन के अवसर पर उन्हें अनुशासन और राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर काम करने की सीख दी गई। अलग-अलग तरह के किस्से, कहानियाँ और चर्चा के माध्यम से प्राचीन भारतीय सभ्यता के अलग-अलग पहलुओं से अवगत कराया गया।

सीखा आत्मरक्षा के गुर—राष्ट्र सेविका समिति के तीन दिवसीय शिविर में आयी बालिकाओं को आत्मरक्षा के गुर भी सिखाए गए। इस दौरान उन्हें दंड संचालन, जूडो, कराटे और आसान तरीकों के जरिए खुद के बचाव की महत्वपूर्ण जानकारी के साथ प्रशिक्षण दिया गया। शिविर की संचालिका अश्विनी नागले ने बताया कि, अलग-अलग शारीरिक व्यायाम और खेल के जरिए भी बालिकाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाने का प्रयास किया गया।

बालिकाओं के अंदर छिपी रचनात्मकता को वेस्ट से बेस्ट मटेरियल बनाने के कौशल को निखारने का प्रयास किया गया। शिविर में उन्हें नैतिक और सामाजिक मूल्यों से अवगत कराया गया। इस अवसर पर निहारिका राजे, सुचिता राजहंस और प्राची पाटिल ने प्रशिक्षणार्थी बालिकाओं का मार्गदर्शन किया।

पौधों की बीस हजार प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर

— डॉ. भगवती प्रकाश

जयपुर। 'अपना संस्थान' की पर्यावरण विशेषज्ञों की तृतीय संगोष्ठी 05 जुलाई 2018 को भीलवाड़ा के एमएलवी टेक्सटाइल व इंजीनियरिंग कॉलेज में सम्पन्न हुई। जिसमें राजस्थान के 24 स्थानों से 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पैसिफिक विश्वविद्यालय के कुलपति व राजस्थान क्षेत्र के संघचालक डॉ. भगवती प्रकाश जी ने जैव विविधता पर कहा कि दुनिया में पुष्प देने वाले तीन लाख प्रकार के पौधे व डेढ़ लाख प्रकार के कीट पतंगे हैं। आपसी समन्वय से जिनका संवर्द्धन होता है। जिन रसायनों पर यूरोपीय देश प्रतिबंध लगा रहे हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में उनका लगातार उपयोग हो रहा है। पौधों की लगभग बीस हजार प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। **अपना संस्थान** के सचिव विनोद मेलाना जी ने बताया कि अपना संस्थान इससे पहले भी उदयपुर व जोधपुर में गोष्ठियां आयोजित कर चुका है। पूरे राजस्थान में दो वर्षों में पांच लाख से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं। अपना संस्थान पौधारोपण के साथ ही वर्षा जल संरक्षण पर काम कर रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम जी ने प्रकृति और अध्यात्मिकता पर विचार रखे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण में सभी की सहभागिता का आह्वान किया।''

सेवा कार्य में प्रसिद्धि की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए

गत दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले ने नई दिल्ली के मावलकर सभागार में संघ के सेवा विभाग की वेबसाइट और सेवागाथा एप का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि दैवीय, प्राकृतिक आपदाओं के समय सबसे पहले संघ के स्वयंसेवक ही पहुंचते हैं, अब यह बात समाज सहज रूप से मानने लगा है। संघ स्वयंसेवकों के जरिए समाज के संकट काल में लोगों की संवेदनाएं जगाने का कार्य करता है। मजदूर, अभावग्रस्त लोगों की जहां जो आवश्यकता हो, वहां स्वयंसेवक उसे समाज के माध्यम से पूरा करते हैं।

स्वामी विवेकानंद का सन्दर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि भूखे व्यक्तियों को प्रवचन देने के पहले उनको रोटी दो, यही उनके लिए उद्धार है। पहले उनकी मूल आवश्यकताओं को पूरा करो, बाद में उनमें अध्यात्म जागृत करो। उन्होंने आगे कहा कि, सेवा कार्य में प्रसिद्धि की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उससे सेवा का महत्व नष्ट हो जाता है। किन्तु लोगों में सेवा की प्रेरणा जगाने के लिए संवाद करना चाहिए इसलिए सेवा के अपने कार्य में गुणात्मक वृद्धि के लिए यह वेबसाइट शुरू की गई है।

कार्यकर्ता आपस में अनुभवों का आदान-प्रदान करें। संघ की 52,000 शाखाएं है, शाखा द्वारा छोटे-छोटे सेवा कार्य करें, उससे और लोग इन सेवा कार्यों से जुड़े इसके लिए संस्थाओं, चंदे-रसीद की आवश्यकता नहीं है। समाज के विभिन्न वर्गों की सेवा के लिए संस्थागत कार्य की आवश्यकता होती है, सेवा भारती इस तरह के कार्य कर रही है। मेरा समय, धन, ज्ञान, अनुभव ईश्वर की संपत्ति है, इसको वंचितों को समर्पित करना ईश्वर की ही सेवा है। जैसे तुलसी की माला हृदय को शांति देती है, वैसे ही सेवा कार्यों की माला हृदय को शांति प्रदान करती है।

इस अवसर पर प्रमुख रुप से उपस्थित केंद्रीय जल संसाधन राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघावाल ने कहा कि सेवा भारती समाज में अभावग्रस्त लोगों के बीच जाकर उन्हें सहारा देने का काम कर रही है।

नीट और जेईई (मुख्य) अब साल में दो बार

इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिए जेईई (मुख्य) और मेडिकल में प्रवेश के लिए नीट की परीक्षा अब साल में दो बार कराई जाएगी। जेईई (मुख्य) जनवरी और अप्रैल तथा नीट फरवरी और मई में कराई जाएगी। इन परीक्षाओं में छात्र दोनों बार शामिल हो सकेंगे। ये परीक्षाएं ऑनलाइन आयोजित कराई जाएंगी और इनके संचालन की जिम्मेदारी नवगठित नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) पर होगी। अभी तक सीबीएसई इन परीक्षाओं का आयोजन करती थी। एनटीए सबसे पहले इस साल दिसंबर में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) का आयोजन करेगी।

सुलगता कश्मीर

समस्या : राजनीतिक नहीं, मजहबी उन्माद की है
समाधान : कश्मीर में नहीं, दिल्ली में है

— नरेन्द्र सहगल

जम्मू-कश्मीर में गहरें में जड़ें जमा चुके पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद को समाप्त करने के लिए महबूबा सरकार को गिराकर प्रदेश को राज्यपाल के हवाले कर दिए जाने का सीधा अर्थ यही है कि अब सुरक्षा बलों को सख्ती करने के सभी अधिकार उन्हें दे दिए गए हैं। पाकिस्तानी घुसपैंठियों, सशस्त्र आतंकवादियों, पत्थरबाजों, प्रशासन में घुसे गद्दारों और इन चारों की पीठ थपथपाने वाले अलगाववादियों की गुलामी से कश्मीर घाटी को आजाद करवाने के इस कदम से आतंकवाद खत्म होगा या और अधिक बढ़ेगा? इस सवाल पर दिल्ली की सरकार ने भली-भांति विचार कर ही लिया होगा। देश की जनता को विश्वास है कि अब की बार आतंकवाद के जन्मदाताओं को भी बख्शा नहीं जाएगा। अगर अब भी चूक गए तो देश की सवा सौ करोड़ जनता मोदी सरकार को बख्शेगी नहीं। ये समस्या भारत की सुरक्षा, अखंडता और स्वाभिमान के साथ जुड़ी हुई हैं।

1947 में देश के विभाजन के साथ ही पैदा हुई मजहबी उन्माद की इस समस्या से निपटने के लिए भारत की सभी सरकारों ने प्राय: सभी अख्तियार आजमा लिए हैं। अनुच्छेद 370 के तहत ढेरों राजनीतिक/आर्थिक सुविधाएं, विशेष आर्थिक पैकेज, वार्ताओं के पचासों दौर, सैनिक कार्यवाही, आतंकियों की घर वापसी, पत्थरबाजों की आम माफी, पाकिस्तान के साथ अनेकों वार्ताएं और सीज फायर और बार-बार राष्ट्रपति शासन इत्यादि सब कुछ आजमा कर देख लिया । मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। दरअसल पाकिस्तान के साथ लगे इस सीमावर्ती प्रांत में जो कुछ भी हो रहा है वह साधारण कानून व्यवस्था के बिगड़ने का मामला नहीं है, ये तो कट्टरपंथी और एकतरफा मजहबी जुनून में से निकल रही इस एक ऐसी राष्ट्रघातक आग है जिसे वार्ताओं, समझौतों और आर्थिक पैकेज जैसे छोटे-मोटे फायर ब्रिगेड बुझा नहीं सकते। भारत के संविधान, राष्ट्रध्वज, संसद और भूगोल को अमान्य करने वाले ऐसे तत्व कभी भी ऐसे समाधान को सामने नहीं आने देंगे, जिससे उनके अलगाववादी उद्देश्य को नुकसान पहुंचे। पाकिस्तान की खुली मदद और कश्मीर में भारतीय संविधान के अंतर्गत सुरक्षा ले रहे अलगाववादियों की सरपरस्ती में कश्मीर के युवकों ने हाथों में संगीनें उठाकर इस्लामी जेहाद के लिए कमर कसी है।

कश्मीर की 'मुक्कमल आजादी' के लिए चलाएँ जा रहे जेहाद का पहला हिस्सा था कश्मीर के हिन्दुओं को निकाल बाहर करना, ये सफल रहा। अब सेना, पुलिस और सरकारी संस्थाओं पर गुरिल्ला हमला करके दूसरे हिस्से को पूरा किया जा रहा है। सुरक्षाबलों पर हो रही पत्थरबाजी साधारण घटना न होकर बाकायदा खूनी जिहाद की सोची समझी राजनीति है। इस विस्फोटक परिस्थिति के लिए राजनीतिक घुटन और आर्थिक पिछड़ेपन को जिम्मेदार बताने वाले बुद्धिजीवी अपने

तथाकथित सेकुलर मुखौटे को उतारकर यथार्थ को निहारने का प्रयास करें तो कश्मीर समस्या का वास्तविक स्वरूप नजर आ जाएगा। सारा उत्पाद एकतरफा मजहबी जुनून है। वहां तो 'इस्लाम' और 'निजामें-मुस्तफा' की हुकूमत के लिए खूनी संघर्ष हो रहा है। वास्तव में कश्मीर की राजनीति प्रारम्भ से ही इसी मजहबी उन्माद से ग्रस्त रही है। शेख अब्दुला, सादिक अली, बक्शी गुलाम मोहम्मद, गुलाम मोहम्मद शाह, सैयद मुफ्ती, फारुख अब्दुल्ला, गुलान नबी आजाद, उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती (सभी मुख्यमंत्री) जैसे नेताओं ने मजहब पर आधारित जिस राजनीति का समावेश कश्मीर में किया है, उसी का नतीजा है वर्तमान पाकिस्तान समर्थित हिंसक आतंकवाद। इस धार्मिक उदंडता को कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी संगठन डेमोक्रेटिक फ्रीडम पार्टी के अध्यक्ष शब्बीर शाह के शब्दों (पोस्टरों) से समझा जा सकता है— ''इस्लाम की क्रांति का सूर्य उग रहा है, आस्था की संतानों को अब आगे आना चाहिए और भारत से आजादी पाने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह की इच्छा हमारी मार्गदर्शक है, कुरआन हमारा संविधान है, जेहाद हमारी नीति है और शहादत हमारी आकांक्षा है।''

संभवतया 'कश्मीर' देश की एकमात्र ऐसी समस्या है जिसपर अभी तक कोई भी राष्ट्रीय सहमति नहीं बन सकी। इस रास्ते की सबसे बड़ी बाधाएं हैं: वोट बैंक की राजनीति, एकरस राष्ट्र जीवन का अभाव, पाकिस्तान का सैनिक हस्तक्षेप और कट्टरपंथी मजहबी भावना। देश और कश्मीर के दुर्भाग्य से इस प्रदेश में सक्रिय संगठन नेशनल कांफ्रेंस, पीपुल डेमोक्रेटिक पार्टी, हुर्रियत कांफ्रेंस, तहरीक-ए-हुर्रियत और सभी आतंकी संगठनों ने क्रमशः ऑटोनॉमी, सैल्फ रूल, ग्रेटर कश्मीर, पाकिस्तान में विलय और मुक्कमल आजादी जैसे समाधान प्रस्तुत किए हैं। ये सभी समाधान देश और प्रदेश के अमन चैन और सुरक्षा पर आधारित न होकर मजहब, जाति और क्षेत्र के धार्मिक और राजनीतिक स्वार्थों पर आधारित हैं। समयोचित जरूरत इस बात की है कि राष्ट्रीय स्तर के सभी राजनीतिक दल अपने दलगत, जातिगत एवं चुनावी स्वार्थों से ऊपर उठकर एक राष्ट्रीय सहमति बनाएं और केन्द्र सरकार द्वारा वर्तमान में उठाए जा रहे कदमों का एक स्वर से समर्थन करें।

उल्लेखनीय है कि सख्त सैन्य कार्यवाही से समस्या का तत्कालिक समाधान जरूर निकलेगा, परन्तु कश्मीर समस्या के स्थायी हल के लिए कुछ ठोस और स्थाई कदम भी उठाने होंगे। अनुच्छेद 370 को हटाकर इस प्रदेश को भारत के शेष प्रदेशों के समकक्ष लाया जाए। इस विशेष अनुच्छेद के समाप्त होते ही अलगाववाद का आधार चरमरा जाएगा। 27 अक्टूबर 1947 को पूरे जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय हो चुका है। प्रदेश की जनता द्वारा चुनी गई संविधान सभा ने इसे मान्य किया है। अतः पाकिस्तान द्वारा जबरदस्ती गैर कानूनी ढंग से हथियाए गए कश्मीर के एक तिहाई भाग को सैनिक कार्यवाही से वापिस लेकर भारत में शामिल किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय कानूनों/परम्पराओं के तहत पाकिस्तान में चल रहे आतंकी प्रशिक्षण शिविरों को सर्जिकल स्ट्राइक जैसी प्रभावशाली सैन्य कार्यवाही से ध्वस्त किया जाए। कश्मीर से विस्थापित होकर आए हिन्दुओं की सम्मानजनक एवं सुरक्षित घर वापसी की सुचारू व्यवस्था के लिए केन्द्र की सरकार को यथाशीघ्र ठोस कदम उठाने चाहिए।

कश्मीर में जेहाद के नाम पर खून-खराबा कर रहे युवकों को कश्मीरियत जम्हूरियत, इन्सानियत और राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाकर उन्हें देश की मुख्यधारा में लाने के लिए देशभक्त और मानवतावादी मुस्लिम विद्वानों को अपनी भूमिका पाकिस्तान परस्त तत्वों की कैद से मुक्त करवाने के लिए जरूरी सैन्य कार्यवाही प्रारम्भ कर दी हैं। यदि अब भी राष्ट्रीय स्तर के और प्रादेशिक राजनीतिक दलों ने अपनी दलगत राजनीति को छोड़कर इस रणनीति का समर्थन न किया तो देश की सुरक्षा और अखंडता खतरे में पड़ सकती है।

(लेखक, रा.स्व. संघ के प्रचारक रहे हैं)

मातृत्व विशाल होता है तो वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा साकार होती है

पिछले दिनों नई दिल्ली में राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापक स्व. लक्ष्मीबाई केलकर की जयंती समारोह आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि हर स्त्री में अनेक शक्तियां होती हैं। उन्हें अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्र जीवन में सामंजस्य बैठाना होता है। मैं समिति की सेविका होने के कारण लोकसभा अध्यक्ष के पद का दायित्व बहुत अच्छे से निभा पा रही हूँ, क्योंकि समिति ने मुझे मातृत्व को विशाल करना सिखाया है। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठकर वे सबके बारे में सोचती हैं, क्योंकि हर दल का अपना एक विचार और आधार है। ऐसे में सांसदों को अपने दल की ओर से जो निर्देश मिलता है, उस पर चलना उनकी मजबूरी होती है। लेकिन जब मातृत्व विशाल हो जाता है तो वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा साकार होती है।

कार्यक्रम में उपस्थित राष्ट्र सेविका समिति की अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख डॉ. शरद रेनू ने कहा कि कोई भी व्यक्ति तभी आनंद की अनुभूति कर सकता है, जब परिवार और समाज में आनंद हो। भारत में एक व्यक्ति विशेष नहीं होता, पूरा समूह और समाज विशेष होता है, समाज के और देश में मूल चिंतन के आधार पर ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। भारतीय समाज में राष्ट्र का केन्द्र बिन्दु परिवार है और परिवार का केंद्र बिंदु स्त्री है, स्त्री ही परिवार, समाज और राष्ट्र को चलाती है। इसलिए महिलाएँ सशक्त होकर समाजकार्य के लिए आगे आएं। (साभार पाञ्चजन्य)

जैतून के औषधीय गुण

जैतून के कच्चे फलों को जलाकर, उसकी राख में शहद मिलाकर, सिर में लगाने से सिर का गंजापन तथा फुंसियों में लाभ होता है। पांच मि.ली. जैतून पत्र स्वरस को गुनगुना करके उसमें शहद मिलाकर 1-2 बूँद कान में डालने से कान के दर्द में आराम होता है। जैतून के कच्चे फलों को पानी में पकाकर उसका काढ़ा बना लें। इस काढ़े से गरारा करने पर दांतों तथा मसूड़ों के रोग मिटते हैं तथा इससे मुँह के छाले भी खत्म होते हैं। जैतून के तेल को छाती पर मलने से सर्दी, खांसी तथा अन्य कब्ज विकारों का शमन होता है। जैतून के तेल की मालिश से आमवात, वातरक्त तथा जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। जैतून के पत्तों के चूर्ण में शहद मिलाकर घावों पर लगाने से घाव जल्दी भरते हैं। जैतून के कच्चे फलों को पीसकर लगाने से चेचक तथा दूसरे फोड़े फुंसियों के निशान मिटते हैं। अगर शरीर का कोई भी भाग अग्नि से जल गया हो तो यह लेप लगाने से छाला नहीं पड़ता। जैतून के पत्तों को पीसकर लेप करने से पित्ती, खुजली और दाद में लाभ होता है। जैतून के तेल को चेहरे पर लगाने से रंग निखरता है तथा सुंदरता बढ़ती है।

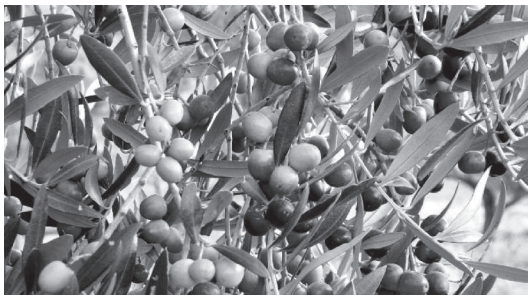

जैविक खेती ने किसानों की बदली तकदीर

— विजयलक्ष्मी सिंह

यदि खेती का तरीका बदल जाए व बाजार से बिचौलिए खत्म कर दें, तो छोटे व मझोले किसान भी अच्छा खासा कमा सकते हैं, इस बात को अपने प्रयोगों से सही साबित कर दिखाया है कर्नाटक में **सावयव कृषि परिवार** ने। आईए मिलते हैं एक साधारण किसान चंद्रप्रकाश से। तुमकर जिले के छोटे से गांव बिलगेरेपाल्या का यह किसान हाड़तोड़ परिश्रम करके भी मुश्किल से गुजारे लायक कमा पाता था। अपने खेत में होने वाली रागी की जिस फसल के 1 क्विंटल के उसे महज ढाई हजार रुपए मिलते थे, आज उसी 1 क्विंटल रागी के अब उसे 22,500 रुपए मिलते हैं। चंद्रप्रकाश जैसे हजारों किसानों की कमाई में जबरदस्त वैल्यू एडिशन को अंजाम दिया है कृषि प्रयोग परिवार ने। संघ के वरिष्ठ प्रचारक उपेंद्र शिनॉय की प्रेरणा से एक समृद्ध किसान पुरुषोत्तम राव के प्रयासों से 1990 में शुरू हुई यह संस्था जैविक खेती के क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। कर्नाटक प्रांत के 175 तहसील में 15000 से अधिक किसानों को संस्था ने जैविक खेती से जोड़कर गरीबी के दलदल से बाहर निकाला है। यह संस्था मूलत: जैविक किसान संघों का संघ है जिसने किसानों को जैविक खेती करने के लिए न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि उनके उत्पादों की मार्केटिंग भी की है।

संस्था के पूर्णकालिक कार्यकर्ता व संघ के स्वयंसेवक आनंदजी की मानें तो किसानों की दशा सुधारने के लिए जैविक खाद निर्माण, बॉयोगैस का उपयोग, मधुमक्खी पालन, गोमूत्र व गोबर का व्यवसायिक उपयोग करने के लिए ट्रेनिंग दी गई।

इतना ही नहीं **कृषक ग्राहक मिलन** के नाम से माह में दो बार लगने वाले मेले में किसानों को अपने उत्पादों को बेचने की सुविधा भी दी जाती है। कभी खेती छोड़कर मजदूरी करने का मन बना चुके मलयर श्रानप्पा अब जैविक खेती से उपजी सब्जियों को सीधे आऊटलेट में बेचकर सालाना 4.50 लाख रुपए तक कमा लेते हैं। वैल्लारी जिले के हुलीकरई गांव के इस किसान का जीवन तब बदल गया जब उसने सावयव कृषि परिवार की सदस्यता ली।

वे बताते हैं कि, तहसील स्तर पर लगने वाले इन मेलों से हर माह 20 लाख रुपए से अधिक उत्पादों की बिक्री की जाती हैं। छोटे-छोटे प्रयोगों से बड़ी-बड़ी सफलताएं मिली। कभी 80 रुपए लीटर में देशी गाय का दूध बेचने वाले किसानों ने उसी दूध से घी बनाकर 2000 रुपए किलो बेचना शुरू किया, वहीं इनके परिवारों की महिलाओं ने आर्गेनिक कुमकुम बनाने की ट्रेनिंग ली, जिसकी बाजार में अच्छी-खासी मांग है।

किसी ने खेती के साथ मधुमक्खी पालन शुरू किया तो कुछ किसानों ने गोबर बेचकर भी धन कमाया। किसानों को अच्छे बीज मिलें, बंजर हो रही जमीन उर्वरक बनें, किसान जल-संरक्षण को अपनाकर सिंचाई के लिए आत्मनिर्भर बनें व जैविक खेती को आसान बनाएं, संस्था ने इन सारे फील्ड में किसानों को प्रशिक्षण दिया। भारत में जहां हर 2 घंटे 15 मिनिट पर एक किसान आत्महत्या करता है, वहां कृषि प्रयोग परिवारों ने किसानों को जीने की नई राह दिखाई है। संस्था की सभी गतिविधियों को बेंगलुरु की राष्ट्रोत्थान परिषद व यूथ फॉर सेवा का पूरा सहयोग मिलता है।

मानस प्रसंग **गतांक से आगे —**

माता पावती को सीता जी के रूप में देखकर लक्ष्मण जी के मन में बड़ा भ्रम उत्पन्न हो गया, किन्तु वे प्रभु श्री रघुनाथ जी के प्रभाव को समझ कर कुछ कह नहीं सकें और बहुत ही गंभीर हो गये। गोस्वामी जी लिखते हैं—

सती कपटु जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी॥
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना। सोइ सरबग्य रामु भगवाना॥
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ॥

अर्थात् जिनके स्मरण मात्र से अज्ञान का नाश हो जाता है, उन सर्वज्ञ और सब कुछ देखने वाले और सबके हृदय को जानने वाले देवताओं के स्वामी भगवान श्री रामचन्द्र जी माता सती के कपट को तुरंत जान गये। स्त्री स्वभाव के प्रभाव में माता सती उन सर्वज्ञ भगवान राम के सामने भी छिपाव करना चाहती है, किन्तु अपनी माया के बल माता सती की प्रशंसा करते हुए वे कोमल वाणी में बोले—

जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत कीन्ह निज नामू॥
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतु॥

अर्थात् प्रभु राम ने पहले हाथ जोड़कर माता सती को प्रणाम किया और पिता सहित अपना नाम बताया और फिर पूछा कि बृषकेतु शिवजी कहाँ है तथा आप यहाँ अकेली वन में किसलिये फिर (घूम) रही हैं ?

श्री रामचन्द्र जी के कोमल और रहस्य से भरे वचन सुनकर माता सती के मन में भय, संकोच और चिन्ता के भाव उत्पन्न हुए, वे कोई उत्तर दिये बिना ही चुपचाप शिव जी के पास यह सोचते हुये चली गई कि मैंने शंकर जी का कहना नहीं माना और श्री राम पर अपने अज्ञान का आरोप किया, अब जाकर क्या उत्तर दूँगी? ऐसा सोच सोचकर माता सती का हृदय जलने लगा।

माता सती के दु:ख को जानकर भगवान रामजी ने उन्हें अपना प्रभाव दिखलाया। गोस्वामी जी लिखते है कि—

सतीं दीख कौतुकु मग जाता। आगें रामु सहित श्री भ्राता॥
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर बेषा॥

अर्थात् माता सती ने राह में जाते हुए देखा कि श्रीराम, सीता और लक्ष्मण उनके आगे चले जा रहे है। तब उन्होंने पीछे की ओर मुड़ कर देखा तो वहाँ भी भाई लक्ष्मण और सीता के साथ सुन्दर वेष में भगवान राम दिखायी दिये। अब तो माता सती जिधर भी देखती, उधर ही सिद्ध मुनीश्वरों से सेवित भगवान राम दिखाई देते। माता सती ने अनेक ब्रह्मा, विष्णु और महेश देखे, जो एक से बढ़कर एक असीम प्रभाव वाले थे और भाँति-भाँति के वेष धारण कर सभी देवता श्री रामचन्द्र जी की वन्दना और सेवा कर रहे हैं।

सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।
जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥

अर्थात् माता सती ने अनगिनत सती, ब्रह्माणी और लक्ष्मी देखीं जो ब्रह्मा आदि देवताओं के रुप के अनुकूल रुप शक्ति स्वरूप उपस्थित थीं।

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

50 लाख स्मार्टफ़ोन से जुड़ेगा छत्तीसगढ़ का कोना-कोना

45 लाख महिलाओं को मिलेगा
Micromax Bharat 2+

5 लाख युवाओं को मिलेगा
Micromax Bharat 4

SKY के लिए पंजीयन 18 मई से शुरू

कौन है हितग्राही?

- ✓ **महिलाओं को मिलेगी प्राथमिकता**
  - ग्रामीण क्षेत्र: SECC 2011 सूची के अनुसार
  - शहरी क्षेत्र: BPL सूची में दर्ज नाम
- ✓ **युवा: नियमित कॉलेज विद्यार्थी**

कैसे करें पंजीयन?

- ✓ ग्रामीण क्षेत्र: ग्राम पंचायत भवन में सचिव से मिलें
- ✓ शहरी क्षेत्र: नजदीकी ज़ोन या वार्ड ऑफिस में मौजूद अधिकारी से मिलें
- ✓ युवा अपने कॉलेज में डीन/प्रिंसिपल से मिलें

पंजीयन का समय

- ✓ सुबह 10:00 से शाम 5:00 बजे तक

अन्य जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर

155309

जुड़ता छत्तीसगढ़ बढ़ता छत्तीसगढ़

#NewChhattisgarh

ChhattisgarhCMO | DPR Chhattisgarh

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

छत्तीसगढ़ संवाद
CHHATTISGARH SAMVAD R.O.NO.64385/2 DATE 31.07.2018

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

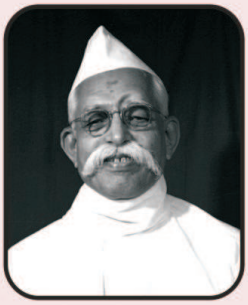

पं. रविशंकर शुक्ल
जयंती ०२ अगस्त

मैथिलीशरण गुप्त
जयंती ०३ अगस्त

खुदीराम बोस
बलिदान दिवस ११ अगस्त

विक्रम साराभाई
जयंती १२ अगस्त

वीर दुर्गादास राठौर
जयंती १३ अगस्त

महर्षि अरविन्द
जयंती १५ अगस्त

रानी अवन्तीबाई लोधी
जयंती १६ अगस्त

मदनलाल धींगरा
बलिदान दिवस १७ अगस्त

जसवंत सिंह रावत
जयंती १९ अगस्त

मेजर ध्यानचन्द
जयंती २९ अगस्त

नागपुर। अ.भा. विद्यार्थी परिषद के संस्थापक सदस्य मा. दत्ताजी डिडोलकर के जीवन पर आधारित पुस्तक का विमोचन करते हुए रा.स्व. संघ के सरसंघचालक प.पू. डॉ. मोहन भागवत जी

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - अगस्त २०१८

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427